वियतनाम युद्ध के तीस बरस : जनता के पराक्रम की अमर गाथा

● तपीश

बीसवीं सदी मेहनतकश अवाम के शानदार संघर्षों की सदी रही। इसने साम्राज्यवाद-पूँजीवाद पर 'अनपढ़ और पिछड़ी जनता' के विजय के 'चमत्कार' देखे। लेकिन बीसवीं सदी के अन्तिम दशकों तक स्थितियाँ बदल चुकी थीं। समाजवादी प्रयोगों के प्रथम चक्र की लड़ाइयाँ हारी जा चुकी थीं। चारों ओर पूँजीवाद के अमरत्व का शोर सुनाई देने लगा था। साम्राज्यवाद ने अमेरिकी अगुवाई में हुंकार भरी। इसका असर भले ही किसी पर पड़ा हो या न पड़ा हो लेकिन भाड़े के कलमघसीटों और इलेक्ट्रॉनिक भाण्ड पिकपिका उठे और लोगों को बताने लगे कि साम्राज्यवादी हाथी कितना विशाल और शक्तिशाली है लेकिन यह बात किसी से छिपी नहीं है कि साम्राज्यवाद का हाथी अरब के रेगिस्तान में धंस चुका है और जितना ही निकलने की कोशिश करता है उतना ही गहरे धंसता जाता है।

वर्ष 2005 में एक ऐसे शानदार जनसंघर्ष के विजय की तीसवीं वर्षगाँठ थी जिसने दिखला दिया कि युद्ध हथियार नहीं बल्कि जनता जीतती है। आज से तीस वर्ष पूर्व वियतनाम की जनता ने विश्व साम्राज्यवाद को ऐसा मुँहतोड़ जवाब दिया था कि इस मुद्दे पर अभी भी अमेरिका शरमाया-शरमाया सा और मुँह छिपाते घूमता है। और इसे बेहयाई कहें या मूर्खता कि फिर मुनाफे की हवस में अंधा होकर यह बुड्ढा साम्राज्यवादी हाथी अरब पहुँच गया। जैसे संकेत मिल रहे हैं, कहा जा सकता है कि इराक़ नहीं बल्कि पूरा अरब जो अमेरिका-विरोधी आग में धधक रहा है, अमेरिका के लिए 21वीं सदी का वियतनाम साबित होगा।

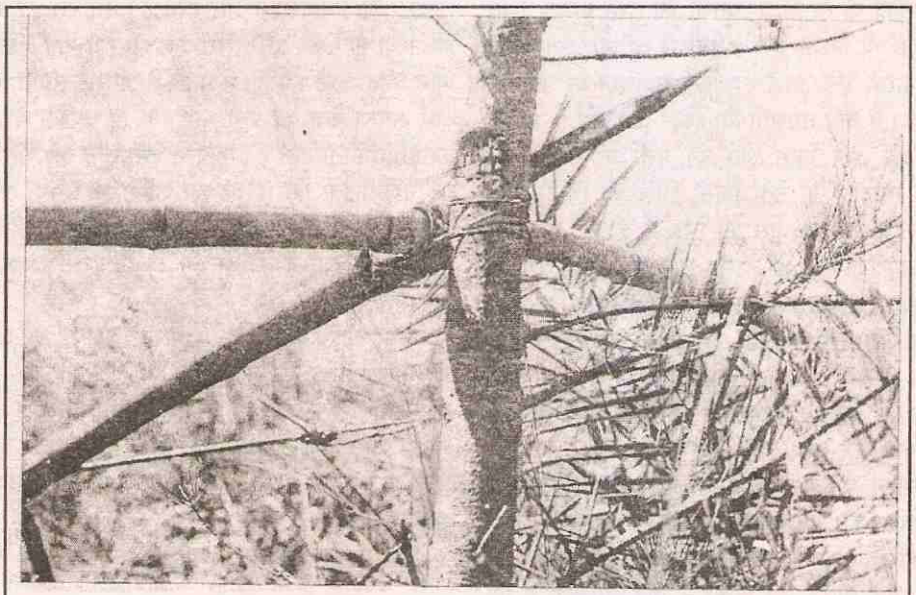

वियतनामी मुक्ति-योद्धाओं द्वारा बनाई गई बाँस की एण्टी एयरक्राफ्ट गन

अपनी आज़ादी के लिए संघर्ष करती वियतनामी जनता को गुलामी का जुआ ढोते रहने के लिए मजबूर करने और कम्युनिज़्म की विजय के डर से अमेरिका ने वियतनाम पर एक ऐसा युद्ध थोप दिया जिसमें लाखों की संख्या में वियतनामी स्त्री, पुरुष और बच्चे मारे गये, जिसने वियतनाम की भूमि को दशकों के लिए बंजर बना दिया। लेकिन फिर भी वह क्या चीज़ थी जिसने वियतनामी जनता के दुर्द्धर्ष संघर्ष को विजयी बनाया? वह कौन-सी ताकत थी जिसने तमाम अवर्णनीय दुखों के बावजूद वियतनामी जनता को निराश-हताश और पराजय-बोध का शिकार नहीं होने दिया और एक छोटे-से देश ने सैन्य और आर्थिक महाबली अमेरिकी की नाक एशिया में इस कदर रगड़ी कि वह आज तक लाल है?

अमेरिका ने अपनी 60 प्रतिशत पैदल सेना, 58 प्रतिशत नौसेना, 50 प्रतिशत वायुसेना, और 83 प्रतिशत विमानवाही पोत इस युद्ध में झोंक दिये थे। एक वियतनामी नागरिक पर 7 साम्राज्यवादी सैनिक भिड़ा दिये गये। पूरे वियतनाम पर 1 करोड़ टन बम बरसाये गये। और नतीजा? वियतनामी जनता ने अपने अद्वितीय शौर्य से यह साबित कर दिया किया साम्राज्यवाद अपराजेय नहीं है। अमेरिकी साम्राज्यवादियों को वियतनाम की शर्तों पर समझौता करने पर मजबूर होना पड़ा। आम लोगों के दिलों में अमेरिकी साम्राज्यवाद का ख़ौफ़ भरने वाले बड़ी मक्कारी से इस बात को छिपा जाते हैं। महाबली अमेरिका और उसकी उच्च सैन्य तकनोलॉजी का वियतनामी जनता ने बाँस से बनी एण्टी एयरक्राफ्ट गन और बेहद पिछड़ी यातायात और संचार व्यवस्था के बूते धुरछक बिगाड़ दिया। इसी से समझा जा सकता है

(पेज 43 पर जारी)

वियतनाम युद्ध के तीस बरस

(पेज 29 से जारी)

कि युद्ध मशीन नहीं जीतती। युद्ध मनुष्य जीतता है। वियतनामी जनता के पास जो चीज़ थी वह था उनका एक लक्ष्य के लिए संघर्ष। वियतनाम की जनता हो ची मिन्ह और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में सिर्फ आज़ादी के लिए नहीं लड़ रही थी। बल्कि वह एक ऐसे समाज के लिए लड़ रही थी जो उनका अपना समाज होने वाला था। यही वजह थी कि इतनी मौतें, इतनी तबाही और बरबादी भी उसे तोड़ न सकी और अपने बाँस के हथियारों और साहस के बूते ही उन्होंने अमेरिका की मिट्टी पलीद कर दी।

इस युद्ध में अमेरिकी सैनिकों ने जो अत्याचार वियतनामी जनता पर किये उनका वर्णन करना किसी के लिए भी एक यातनादायी अनुभव हो सकता है। दुनिया भर में "जनतंत्र और मानवतावाद" के सबसे बड़े ठेकेदार ने जिस कदर मानवाधिकार और जनवादी मूल्यों की चिन्दी-चिन्दी वियतनाम में की उसकी कोई और मिसाल देखने को नहीं मिलती। लेकिन मानवता के ख़िलाफ़ किये गये इन अपराधों का मूल्य भी अमेरिका को चुकाना पड़ा। वियतनाम में पराजय ने पूरे अमेरिकी जनमानस को झिंझोड़कर रख दिया। अपनी शक्ति में आत्मविश्वास का जो अमेरिकी दम्भ था वह छिन्न-भिन्न हो गया। यह पूरे अमेरिकी समाज के लिए एक 'ट्राउमा' था। नतीजा यह हुआ कि वियतनाम युद्ध से जो अमेरिकी सैनिक लौटे उनमें से अधिकांश को मनोवैज्ञानिक रोग हो गये। किसी को लगता था कि कोई वियतनामी गुरिल्ला उस पर घात लगाए बैठे है और वह अगर सोया तो उसे मार दिया जाएगा। किसी को लगता था कि छत उसके ऊपर गिर जाएगी। इसी तरह के तमाम मानसिक विकार अमेरिकी सैनिकों में पनपे। इससे यह साफ़ हो गया कि दुनिया का सबसे शक्तिशाली राष्ट्र अन्दर से कितना खोखला, कमज़ोर और खण्डित है। ये रोग इस क़दर बढ़े कि अमेरिकी मनोविज्ञान में एक अलग श्रेणी का जन्म हुआ—'दि वियतनाम सिण्ड्रोम'। यह सिण्ड्रोम आज तक अमेरिका के पीछे पड़ा है।

वियतनाम विजय जनता की ताकत में अटूट आस्था पैदा करने वाली विजय है। वह अद्वितीय है। लेकिन यह भी याद रखना होगा कि अगर हम उसी विजय के नशे में चूर रहें तो भावी चुनौतियों का मुकाबला नहीं कर सकते। यह विडम्बना ही तो है कि जिस वियतनाम ने अमेरिका को हराकर जनता की विजय की एक ऐसी गाथा लिखी जिसका कोई सानी नहीं है, वही वियतनाम आज वैश्विक पूँजीवादी मण्डी की एक कड़ी बन चुका है। जिस जनता को अमेरिका अपनी सारी सैन्य ताकत झोंक कर नहीं हरा सका उसे पूँजी की घुसपैठ से और वियतनाम के अन्दर के ही पूँजीवादी तत्वों की मदद से हरा दिया। लेकिन आज फिर से वे देश जो समाजवाद की पहली प्रयोगशाला बने, असन्तोष की ज्वाला में जल रहे हैं। रूस, चीन, वियतनाम, पूर्वी यूरोप के देशों में पूँजीवादी पुनर्स्थापना के बाद बेरोज़गारी और ग़रीबी का जो आलम है उसने जनता को यह सबक दे दिया है कि समाजवाद को खोकर उन्होंने क्या खोया है। लेकिन आज विश्व क्रान्ति की निर्णायक कड़ियों में ये देश शामिल नहीं हैं। आज विश्व सर्वहारा क्रान्ति की निर्णायक कड़ी तीसरी दुनिया के वे देश हैं जहाँ पूँजीवाद अपेक्षाकृत ज्यादा उन्नत है। इन देशों में जनता के असन्तोष का महासमुद्र उफन रहा है। इन देशों में भारत भी शुमार है।

पूरा अरब अभी राष्ट्रीय मुक्ति की मंज़िल से गुज़र रहा है। अरब की लड़ाई को छोटा करके नहीं आँका जा सकता है। यह विश्व साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ जनता की लड़ाई का एक अहम मोर्चा है। अरब में फंसे होने के कारण ही अमेरिका ईरान, क्यूबा और उत्तर कोरिया में हस्तक्षेप नहीं कर पा रहा है।

वियतनाम पूँजी की ताकतों से हार गया। लेकिन ये हार अन्तिम नहीं है। ऐसे में लेखक को हो ची मिन्ह की ही कविता की कुछ पंक्तियाँ याद आ रही हैं :

हमारे पहाड़ हमेशा रहेंगे,
हमारी नदियाँ हमेशा रहेंगी,
हमारी जनता हमेशा रहेगी,
अमेरिकी हमलावरों को हराकर,
हम फिर से गढ़ेंगे और,
अपनी भूमि को दस गुना ज़्यादा सुन्दर बनाएँगे।

भगतसिंह ने कहा...

"भयानक असमानता और ज़बर्दस्ती लादा गया भेदभाव दुनिया को एक बहुत बड़ी उथल-पुथल की ओर लिये जा रहा है। यह स्थिति अधिक दिनों तक कायम नहीं रह सकती। स्पष्ट है कि आज का धनिक समाज एक भयानक ज्वालामुखी के मुँह पर बैठकर रंगरेलियाँ मना रहा है और करोड़ों शोषित लोग एक भयानक खड्ड की कगार पर चल रहे हैं।"

(असेम्बली में बम फेंकने के बाद दिल्ली के सेशन जज की अदालत में 6 जून, 1929 को दिया गया भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त का ऐतिहासिक बयान)

नया वर्ष
सपनों की उड़ानों के नाम
संघर्ष के संकल्पों के नाम
भविष्य में आस्था के नाम!